“उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में चरित्र - सृष्टि का अनुशीलन”

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध का प्रारुप

-: शोधार्थी :-

जाधवर धनराज संदीपान

एम.ए., बी.एड्. एम.फिल (हिंदी)

-: शोध निर्देशक :-

डॉ. मनोहर चपळे

एम.ए., एम.फिल., नेट, पीएच.डी. (हिंदी)

हिंदी भाषा तथा साहित्य अनुसंधान केंद्र,

महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातूर - ४१३५१२

मार्च २०१६

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में चरित्र-सृष्टि का अनुशीलन

-: अनुक्रमणिका :-

भूमिका

१) प्रथम अध्याय : उषा प्रियंवदा - व्यक्तित्व एवं कृतित्व

२) द्वितीय अध्याय : चरित्र-सृष्टि एवं कथा साहित्य : सैध्दान्तिक अध्ययन

३) तृतीय अध्याय : उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य का कथ्यगत अध्ययन

४) चतुर्थ अध्याय : उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी पात्रों का अनुशीलन

५) पंचम् अध्याय : उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पुरुष पात्रों का अनुशीलन

६) षष्ठम् अध्याय : उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

७) सप्तम् अध्याय : उपसंहार एवं निष्कर्ष

परिशिष्ट

१) संदर्भ ग्रंथ सूची

२) सहाय्यक ग्रंथ सूची

३) पत्र - पत्रिकाएँ

भूमिका

प्राचीन काल से मानवी जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्री ने पुरुष का साथ दिया है । वह उसकी सहधर्मिणी है, अर्धांगिनी है । वह उससे पीछे कैसे रह सकती है । युध्द के क्षेत्र में देखिए क्षत्राणियों ने हर कदम पर पुरुषों का साथ दिया यहाँ तक कि युध्द-भूमि में का संचालन भी स्वयं ही किया । साहित्य के क्षेत्र में जहाँ साहित्यकारों ने साहित्य को नयी दृष्टि दी, यहाँ महिलाओं ने भी अपने जीवन दृष्टिकोण के साथ साहित्य के इतिहास में अपनी कृतियों के द्वारा नवीन पृष्ठ जोड़ दिया ।

भारत में प्रारंभ से ही नारियों की शिक्षा-दीक्षा का अभाव रहा, जिसकी वजह से पुरुष साहित्यकारों की संख्या अत्याधिक रही, प्रत्येक काल के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों की संख्या अल्प मात्र में रही । परन्तु शनैः शनैः समय परिवर्तन हुआ और आधुनिक काल के दौरान नव जागृति और नव चेतना का उदय हुआ । स्वतंत्रता के बाद समाज की कुरीतियों में सुधार आने लगा और महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ हुई । फलतः उनके ह्रदय में नवीन भावनाओं ने जन्म लिया ।

इनके अधिकांश साहित्य का कथ्य दो दृष्टियों तथा दो संस्कृतियों के बीच भटकती नारी की त्रासदी है । भावना तथा संवेदना के धरातल पर टूटती नारी को केन्द्र बनाकर उषाजी ने अपने साहित्य को कलात्मक व प्रभावशाली बनया है । इन्होंने कृतिकार की ईनामदारी के साथ जीवनानुभव की प्रामाणिकता को साहित्य में उतारा है । रचना के प्रति उनकी यह प्रतिबध्दता हमें सहज ही आकर्षित करती है ।

साठोत्तरी हिंदी साहित्य जगत में उषा प्रियंवदा एक प्रसिध्द लेखिका है । जिनके साहित्य में पुरुष सें अधिक नारी को केन्द्र बनाकर पुरुष मानसिकता को वर्तमान अंदाज में चित्रित किया गया है । उषा प्रियंवदा का लेखन और स्वयं नारी होने के नाते नारी जीवन के प्रति जिज्ञासा, उसके प्रश्न, क्रमशः परिवर्तित हो रही उसकी जीवन दृष्टि, मुक्ति की कामना, नारी के अन्तर्द्वन्द्व और उसकी समस्याओं ने मुझे अक्सर आकर्षित किया है ।

उद्देश्य :

१) उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालना ।

२) स्त्री पुरुषों को बदलते संबंधो का विश्लेषण करना ।

३) स्त्री पुरुष पात्रों के विविध रुपों पर प्रकाश डालना ।

४) नारी जिवन का यथार्थ और समस्याओं को स्पष्ट करना ।

५) समाजिक दृष्टि से स्त्री-पुरुषो के साथ रहने की प्रतिबध्दता के महत्व को स्पष्ट करना ।

अनुसंधान की उपलब्धि :-

प्रस्तुत शोध विषय को लेकर अनुसंधान कार्य करना पूर्णत: अभिनव कार्य है । इस विषय को लेकर अब तक कोई भी कार्य संपन्न नही हुआ । उषा प्रियंवदाजी के साहित्य में चित्रित स्त्री-पुरुषों के विविध रुपों के साथ स्त्री-पुरुषों के वर्तमान जीवन को नए अंदाज में यथार्थ जीवन शैली के साथ अंकित किया है । जिससे साहित्य समाज स्त्री - पुरुषों के आधुनिक रुपों से परिचित होगा । साथ ही समाज, साहित्य, राजनीति आदि क्षेत्रों को इस अनुसंधान से निश्चित ही लाभ होगा ।

-: अनुसंधान का प्रारुप :-

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में चरित्र-सृष्टि का अनुशीलन को प्रस्तुत करना ही अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य है । जिसे अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से सात अध्यायों में विभाजित किया है । जिसका संक्षिप्त प्रारुप निम्नवत है ।

-: प्रथम अध्याय :-

उषा प्रियंवदा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय के अंतर्गत उषा प्रियंवदा का संक्षिप्त जीवन परिचय जिसमें - बचपन, शिक्षा, विवाह, पारिवारिक जीवन, विदेश में जीवन, सेवां तथा पुरस्कारों का विश्लेषण किया जायेगा । साथ हि उनका लेखन आरंभ, कहानी लेखन, उपन्यास लेखन तथा अन्य लेखन का विश्लेषण किया जायेगा, आदि ।

-: द्वितीय अध्याय :-

चरित्र-सृष्टि एवं कथा साहित्य: सैध्दान्तिक अध्ययन

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत चरित्र-सृष्टि एवं कथा-साहित्य का सैध्दान्तिक अध्ययन करते हुए चरित्र-सृष्टि का अभिप्राय, आवश्यक तत्त्व तथा उद्‌देश्य पर प्रकाश डाला जायेगा। साथ ही पात्र चरित्र का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए पात्रों के प्रकार, आवश्यक गुण, मूल संवेदनाएँ तथा चरित्र-सृष्टि की विविध प्रणालियाँ, आवश्यकता व महत्व प्रतिपादित किया जायेगा, आदि।

-: तृतीय अध्याय :-

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य का कथ्यगत अध्ययन

तृतीय अध्याय के अंतर्गत उषा प्रियंवदाजी द्वारा लिखित कहानी संग्रह के अंतर्गत आनेवाली प्रमुख कहानियों का संक्षिप्त में कथ्यगत सार लिखा जायेगा। साथ ही उषाजी द्वारा लिखित पाँच उपन्यासोंका संक्षिप्त में कथ्यगत अध्ययन किया जायेगा, आदि।

-: चतुर्थ अध्याय :-

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी पात्रों का अनुशीलन

चतुर्थ अध्याय में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी के पारिवारिक तथा सामाजिक धरातल से जुडे चरित्रों का चरित्र-चित्रण, नारी के विविध रुप, नागरी की आधुनिक स्थिति आदि का नारी पात्रों के साथ विश्लेषण किया जायेगा, आदि।

-: पंचम् अध्याय :-

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पुरुष पात्रों का अनुशीलन

पाँचवे अध्याय में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में पुरुषों के पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधो के आधार पर बने विविध रुपों को, पुरुष मानसिकता के आधार पर पुरुष पात्रों को विस्तृत विश्लेषण किया जायेगा, आदि।

-: षष्टम् अध्याय :-

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

छटे अध्याय के अंतर्गत उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में भाषा शिल्प तथा शैली, कहावतें, मुहावरें आदि का किस प्रकार प्रयोग किया गया है, इसका विश्लेषण किया जायेगा, आदि ।

-: सप्तम् अध्याय :-

उपसंहार

शोधकार्य के निष्कर्ष को उपसंहार, शीर्षक में प्रस्तुत किया जायेगा, आदि ।

परिशिष्ट : १) संदर्भ ग्रंथ सूची

२) सहाय्यक ग्रंथ सूची

३) पत्र - पत्रिकाएँ

शोधार्थी

जाधवर धनराज संदीपान

एम.ए., बी.एड्. एम.फिल (हिंदी)

शोध निर्देशक

डॉ. मनोहर चपळे

एम.ए., एम.फिल., नेट, पीएच.डी. (हिंदी)

हिंदी भाषा तथा साहित्य अनुसंधान केंद्र,

महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातूर